मासिक पत्रिका जनवरी 2018

"सब काम धर्मानुसार, अर्थात् सत्य और असत्य को विचार करके करना चाहिए।"-महर्षि दयानन्द सरस्वती

॥ ओ३म् ॥

आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश -1 (पंजी.)

ARYA SAMAJ KAILASH-GREATER KAILASH-I (Regd.) Regn. No. 3594/1968

New Delhi-110048 • Tel.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in • Web.: www.aryasamajgk1.org

An ISO 9001:2015 Certified Institution

विजय लखनपाल	विजय भाटिया	अमर सिंह पहल
प्रधान	मंत्री	कोषाध्यक्ष

मूर्तिपूजा का मतलब है-'उल्टी गंगा बहाना'

-जगदीश प्रसाद शर्मा- **साभार:** 'परोपकारी' अजमेर-नवम्बर (द्वितीय) 2017

ईश्वर की स्तुति हेतु संस्कृत का लोक-प्रचलित एक सुप्रसिद्ध श्लोक निम्नानुसार है-

"त्वमेव माता च पिता त्वमेव-त्वमेव बन्धुश्च सखा त्वमेव।

त्वमेव विद्या द्रविणम् त्वमेव-त्वमेव सर्वम् मम देव देव॥"

अर्थात्-"हे ईश्वर! तुम ही मेरी माता हो, तुम ही मेरे पिता हो, तुम ही मेरे भाई-बन्धु हो, तुम ही मेरे मित्र हो, तुम ही मेरी विद्या हो, तुम ही मेरे धन हो और तुम ही मेरे सब देवों के देवता हो, यानि तुम ही मेरे सब कुछ हो।"

इस श्लोक से स्पष्ट है कि ईश्वर को हम लोग, माता-पिता मानते हैं। अर्थात् हम उनके बेटा-बेटी हैं। इस रिश्ते के कारण ईश्वर, मूर्तियों एवं चित्रों की पूजा और मन्दिरों के सम्बन्ध में जो बातें उभरकर आती हैं, वे निम्नानुसार हैं-

1. माता-पिता दुनिया में पहले आते हैं और बेटा-बेटी बाद में आते हैं। इसका अर्थ यह हुआ कि माता-पिता होने के कारण ईश्वर मनुष्य के पैदा होने (सृजन) के पहले से ही इस दुनिया में उपस्थित है।

2. दुनिया में हर दिन और हर पल लोग मरते रहते हैं, एवं जन्म लेते रहते हैं। माता-पिता होने के कारण इस दुनिया में व्यवस्था बनाये रखने के लिये ईश्वर का हमेशा जीवित रहना आवश्यक है। जब तक संसार है, तब तक मनुष्य का जन्म होना जारी रहेगा। और इसके लिये तब तक तो निश्चित ही ईश्वर भी नहीं मरेगा।

3. मनुष्य के पैदा होने पर उसके पालन की व्यवस्था करने, और कर्मों के अनुसार फल देनेके लिये ईश्वर हमेशा उपलब्ध रहते हैं।

4. प्रलय के बाद दुनिया (प्रकृति) को फिर से बनाने एवं उसे चलाने के लिये ईश्वर का जीवित रहना आवश्यक है।

5. सृजन, संचालन और प्रलय का यह क्रम निरन्तर चलता रहता है। अत: सृष्टि के सृजन, संचालन और प्रलय के लिये ईश्वर हमेशा जीवित रहता है, अर्थात् ईश्वर शाश्वत है। जो कभी नहीं मरता (अमर है)। वह कभी बूढ़ा भी नहीं होता (अजर है)। इसीलिये ईश्वर अजर-अमर है।

6. मूर्तिपूजक लोग बेजान वस्तु से बनी मूर्ति और चित्र को ईश्वर मानकर पूजते हैं। मूर्ति और चित्र के शिल्पकार और चित्रकार मनुष्य होते हैं। पैदा होने के बाद खुद मनुष्य द्वारा बनाई गईं (पैदा की गईं) मूर्तियाँ, और चित्र मनुष्य की कृतियाँ हैं, जिन्हें उसके बेटा-बेटी की उपमा देना तो युक्तिसंगत होने से ठीक है। लेकिन माता-पिता की उपमा कतई नहीं दी जा सकती। अत: सबके माता-पिता ईश्वर मूर्ति और चित्र के रूप में नहीं हो सकते।

7. बनाने वाला बनाई गई वस्तु से, बड़ा होता है। इस तर्क के आधार पर मनुष्य द्वारा बनाई गई मूर्ति और चित्र से मनुष्य ही बड़ा है। इसीलिये महान् मूर्तिकारों और चित्रकारों को ही पुरस्कार देकर सम्मानित किया जाता है न कि उसके

द्वारा निर्मित मूर्तियों और चित्रों को। मनुष्य को बनाने वाला ईश्वर मनुष्य से बड़ा है। इस तरह, ईश्वर मनुष्य से बड़ा तथा मनुष्य मूर्ति और चित्र से बड़ा है। अत: मनुष्य द्वारा बनाई गई मूर्तियाँ और चित्र भगवान् नहीं हैं।

मूर्ति-पूजा के पक्षधर लोग प्राय: दो बातें कहते हैं-पहली तो यह कि ईश्वर से मिलने के लिये मूर्ति-पूजा पहली सीढ़ी है और दूसरी यह कि ईश्वर की पूजा का कोई न कोई आधार (प्रतीक) तो होना ही चाहिये। अब प्रश्न यह पैदा होता है कि पहली सीढ़ी मानकर, पूरी जिन्दगी मूर्ति-पूजा ही करते रहे, तो दूसरी सीढ़ी कब चढ़ेंगे? पहली कक्षा में ही अपने पूरे जीवन को लगाने वाले क्या कभी दूसरी, तीसरी, चौथी आदि आगे की कक्षाओं में पहुँचकर आगे की पढ़ाई कर सकेगें?

ईश्वर निराकार है, निराकार होने के कारण जब ईश्वर को किसी शिल्पकार और चित्रकार ने देखा ही नहीं, तो शिल्पकार और चित्रकार द्वारा उसकी मूर्ति और चित्र बनाये ही नहीं जा सकते। अत: ईश्वर की काल्पनिक प्रतिमा (मूर्ति और चित्र) बनाकर उसे पूजना और प्रथम सीढ़ी मानकर उसमें ध्यान लगाना ईश्वर की उपासना नहीं है। बल्कि, अज्ञानता एवं शुद्ध पाखण्ड ही है।

समाज में प्रचलित प्रथा के अनुसार किसी जीवित व्यक्ति की मूर्ति और चित्र पर पुष्प अर्पित करके उसकी पूजा नहीं की जाती, परन्तु मृत्यु होने पर व्यक्ति के चित्र और मूर्ति पर पुष्प और फूल माला आदि चढ़ाये जाते हैं। अत:, हमेशा जीवित रहने वाले शाश्वत (अजर-अमर) परमात्मा की मूर्ति और चित्र बनाकर उसकी पूजा की ही नहीं जा सकती। ईश्वर की मूर्ति और चित्र पर फूल आदि चढ़ाने का तात्पर्य यह है कि मूर्तिपूजक लोग शाश्वत (अजर-अमर) एवं निराकार ईश्वर को मरा हुआ समझते हैं।

एक दिन एक आदमी किसी कार्य से किसी व्यक्ति के पास मिलने जाता है। पहुँचने पर पता चलता है कि कहीं बाहर गये हुये होने से वह व्यक्ति नहीं मिल पाया। उस व्यक्ति के न रहने पर उसके चित्र, कुर्सी, मेज़ आदि जो सभी जड़ (बेजान) पदार्थ हैं, को अपनी इच्छा और कार्य बताकर आ जाने से, क्या मिलने गये व्यक्ति का कार्य क्या सिद्ध हो जायेगा? इसका उत्तर होगा-"निश्चित ही नहीं।" कार्य नहीं होने के कारण निम्नानुसार हैं-

1. कार्य कराने के इच्छुक व्यक्ति का कार्य करने वाले व्यक्ति से मिलना नहीं हुआ।

2. कार्य करने वाले व्यक्ति के आवास पर चित्र, कुर्सी, मेज आदि जड़ वस्तुओं को कही गई बात व प्रार्थना उस व्यक्ति तक नहीं पहुँची।

यदि हमें किसी को अपनी बात कहकर उससे कुछ प्राप्त करना है तो इसके लिये यह आवश्यक है कि हमारी इच्छा व प्रार्थना वाली आवाज उस तक पहुँचनी चाहिये, जिसके लिये कार्य कराने वाले व्यक्ति का, कार्य करने वाले व्यक्ति से मिलना आवश्यक है। कुछ लोग तर्क देते हैं कि जैसे सांसारिक जगत् में खुद मिले बिना ही किसी व्यक्ति के माध्यम से बात पहुँचाकर सिफ़ारिश और रिश्वत से काम बन जाते हैं वैसे ही परमात्मा से भी पुजारी-पण्डितों के माध्यम से काम कराया जा सकता है। किन्तु मनुष्य को अपने-अपने कर्मों का ठीक-ठीक फल देने वाले सर्वज्ञ (सब कुछ जानने वाले) ईश्वर न तो किसी की सिफारिश मानते हैं और न ही वे रिश्वतखोर हैं। अत: ईश्वर से मिलने की राह को जानने वाला सच्चा महात्मा किसी इच्छुक व्यक्ति को ईश्वर से मिलने की, केवल राह ही बतायेगा।

अजर-अमर होने से परमात्मा सदा है तथा सर्वव्यापक होने से वह सब जगह व्याप्त है एवं सभी पदार्थों और जीव जन्तुओं में समाया हुआ है। इस तरह समस्त संसार उसमें और वह समस्त संसार में व्याप्त है।

परमात्मा को छोड़कर उसके द्वारा निर्मित पेड़-पौधों एवं जीव-जन्तुओं, निर्जीव वस्तुओं, तथा इनसे निर्मित निर्जीव (बेजान) मूर्तियों और चित्रों की पूजा को, ईश्वर की पूजा मानना हमारी अज्ञानता है।

दुनिया में सभी जीव, जिनमें मनुष्य भी शामिल हैं, अपना मुँह खोलकर ही भोजन ग्रहण करते हैं। सभी जानते हैं कि 'प्राण प्रतिष्ठा' का अनुष्ठान किये बिना भी, और करने के बाद भी मूर्तियाँ और चित्र निर्जीव ही रहने के कारण भोजन करने के लिये अपना मुँह नहीं खोल सकते। फिर भी मन्दिरों में मूर्तियों और चित्रों को भोग लगाया जाता है। भोग में लाये गये भोजन को पुजारी-पण्डे और अन्य मूर्तिपूजक लोग ही खाते हैं। ■■

सम्पादक: सतीश चन्द्र सक्सेना

जनवरी 2018 मास में साप्ताहिक सत्संग

दिनांक	वक्ता	विषय
07	श्री अंकित उपाध्याय (8588079150)	भजन
14	श्री वेद कुमार वेदालंकार (9810106562)	वेद के अनुसार जीवन कैसे बिताएँ?
21	श्री गजानन्द शास्त्री (9810445519)	इस देश के मूलवाशी कौन थे?
28	आचार्य वीरेन्द्र विक्रम (9899908766)	मनुस्मृति भारत का सबसे पहला संविधान।

दिसम्बर मास में प्राप्त दान राशि:—

नाम	राशि	नाम	राशि	नाम	राशि
M/s मुंजाल शोवा लि. / श्री योगेश मुंजाल	21,000/-	सुश्री रक्षा पुरी	5,000/-	श्री बाला अशोक शर्मा	2,100/-
श्रीमती योगराज अरोड़ा	21,000/-	श्रीमती सुदेश चोपड़ा	5,000/-	श्री आत्म प्रकाश रेलन	2,000/-
M/s कृषि रसायन एक्सपोर्ट प्रा.लि.	15,000/-	श्री बाल कृष्ण पंगाशा	5,000/-	श्री बलदेव कस्तुरिया	2,000/-
श्री सुनील अबरोल	10,000/-	डॉ. विनोद मलिक	4,800/-	श्रीमती मधु अरोड़ा	1,100/-
श्री एल.वी. कुमार	7,500/-	श्रीमती उषा मरवाह	4,100/-	श्रीमती सुनीता पुरी	1,100/-
तनेजा फाउण्डेशन- श्री आर.के. तनेजा	6,100/-	कर्नल गोपाल वर्मा	4,000/-	श्री एस.एल. आनन्द	1,100/-
श्री रमन कुमार मेहता	5,100/-	श्रीमती प्रेम शर्मा	4,000/-	कर्नल विनय खन्ना	1,000/-
श्री अरुण कुमार बहल	5,100/-	श्री विजय कुमार भाटिया	3,100/-	श्री आर.के. सुमानी	1,000/-
श्री विजय लखनपाल	5,000/-	श्री पुनीत गर्ग	3,100/-	श्रीमती चन्दु सुमानी	1,000/-
श्रीमती अमृत पॉल	5,000/-	श्री अमर सिंह पहल	3,100/-	श्री गौरव सुमानी	1,000/-
श्री राजीव कुमार चौधरी	5,000/-	श्री प्रभोध चन्द्र गुप्ता	3,000/-	श्री प्रेम मेहता	750/-
सुश्री आदर्श भसीन	5,000/-	श्रीमती सुशीला गुलाटी	2,200/-	सुश्री कमला चौधरी	501/-
श्रीमती सतीश सहाय	5,000/-	श्री विश्रत रेड्डी	2,100/-	सुश्री किरण शर्मा	500/-
श्री राजेन्द्र कुमार वर्मा	5,000/-	पं. मेघश्याम वेदालंकार	2,100/-	गुप्त दान	500/-
		भारत विकास परिषद्	2,100/-	सुश्री किरण सिक्कु	500/-
		श्री अशोक चोपड़ा	2,100/-	श्रीमती आशिमा मेहता	500/-
		श्री मूल राज अरोड़ा	2,100/-		

दिसम्बर माह में पुरोहितों द्वारा एकत्रित धनराशि :

❖ श्री वेद कुमार वेदालंकार ₹ 2,100/-

❖ आचार्य वीरेन्द्र विक्रम ₹

महत्त्वपूर्ण सूचनाएँ-

❖ **लोहड़ी** का पर्व 13 जनवरी, 2018 (शनिवार) को आर्य समाज कैलाश-ग्रेटर कैलाश-1 के परिसर में सायंकाल 6:00 से 7:00 बजे तक यज्ञ के पश्चात मनाया जायेगा। जलपान व चाय का प्रबन्ध रहेगा। सब सदस्य सपरिवार आमंत्रित हैं।

❖ **माघ यज्ञ** - प्रति वर्ष की भांति आर्य समाज महिला सत्संग-ग्रेटर कैलाश-1 में दिनांक 14 जनवरी 2018 से 10 फरवरी 2018 तक प्रात: 10:30 - दोपहर 12:00 बजे तक मनाया जाएगा। आप सादर आमंत्रित हैं। ■■

MAHARSHI DAYANAND CHARITABLE MEDICAL CENTRE

Arya Samaj Kailash-Greater Kailash-I, New Delhi-110048

Ph.: 29240762, 46678389 • E-mail : samajarya@yahoo.in

An ISO 9001:2015 Certified Institution

Hair or Skin problems

(बाल या त्वचा की समस्याओं के लिए)

परामर्श तथा इलाज के लिये : (Consultation)

- Nail Diseases (नाखुन समस्या)
- Hair Fall (बालों का गिरना)
- Psoriasis (सोरायसिस)
- Vitiligo (सफ़ेद दाग, ल्यूकोरमा)
- Skin Infections (त्वचा के संक्रमण)
- Dandruff (रूसी)
- Acne, Melasma (मुँहासे, झाईयाँ)
- Allergies (खारिश)
- Pigmentation (काले निशान, दाग, धब्बे)

Dr. Jaya Gupta
M.D. Dermatologist & V.D. Leprosy
Mon., Wed., Fri. - 11:30 am - 12:00 pm

Dr. Dharamvir Singh
M.D. Dermatologist
Saturday - 10:30 - 11:30 am

Dr. Sanjeev Gulati
M.D. (J.I.P.M.E.R.) Dermatologist
Mon. & Thu. - 12:00 - 01:00 pm

साधारण शल्य-चिकित्सा (Procedures)

- **Removal of various skin lesions by RF Cautery (Warts, Skin Tags, Moles, Corns etc.)**
  (**Dr. Jaya Gupta** - Wed. & Fri. – 11:30 am to 12:30 pm)

EAR NOSE THROAT

Dr. O.P. Chadha

M.B.B.S., D.L.O

Tues. - 10.00 to 11.00 A.M.